शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति काव्य

डॉ.परमानन्द पाटीदार
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय महाविद्यालय
कन्नौद, देवास, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत की ज्ञान परंपरा प्राचीन और समृद्ध है। इसी के कारण संसार में भारत की अलग पहचान है। भारतीय ज्ञान परंपरा को सदा ही आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी देश के सभी नागरिकों, युवा पीढ़ी तथा विद्यार्थियों की है। सामाजिक परिवर्तन में भारतीय भक्ति साहित्य की भूमिका बहुतमहत्वपूर्ण है। भक्ति काव्य ने भारत की ज्ञान परंपरा को सरल शब्दों में आम जन तक पहुंचाया है। भक्तिकाव्य धारा ने देश में एक नये आंदोलन की शुरुआत की। भारतीय ज्ञान परंपरा पवित्र, सरल, निश्चल और अद्भुत अनुभूति की श्रृंखला है जिसमें कई संतों, महात्माओं की आस्था, आदर्श, मूल्य, संस्कृति, ज्ञान, दर्शन, सभ्यता, पद्धतियां भक्ति और कर्मों की गति समाहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा किसी एक तत्व को लेकर चलने वाली नहीं अपितु एक विशाल संचेतना है। जिसके कारण अपने हृदय में देश के कणकण में समाहित ज्ञान को स्थान प्रदान किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में आपसी तालमेल के साथ ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने में भक्ति काव्य का भी महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में वैश्विक संस्कृति भारतीय संस्कृति को अपना कर मूल की ओर लौट रही है।

बीज शब्द : *भारतीयता, ज्ञान की परंपरा, साहित्य, भक्तिकाल, संस्कृति, भक्ति काव्य*

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा सहस्त्रों सूर्यों की किरणों के समान अनंत प्रकाश वाली है। भारत वर्ष की सबसे सुंदर, सुदृढ़ और शक्तिशाली परंपरा, साहित्य परंपरा है जो प्राचीन काल से ज्ञान का मूल स्रोत रही है। जिसने विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं को अपनी वाणी के माध्यम से परिष्कृत और परिमार्जित किया है। प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा बहुत ही समृद्ध थी और इसका लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को सम्मिलित करते हुए समाज के पूरे वातावरण को समृद्ध और विकसित करना था। जब संपूर्ण विश्व अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता था तब पूरे भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मनुष्य को पशुता से मुक्त कर सर्वश्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर संपूर्ण मानव बना रहे थे। भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान से नई पीढ़ी में गौरव बोध की भावना बढ़ेगी। शिक्षा लोगों के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय प्रगति, सभ्यता और संस्कृति के उत्थान हेतु बहुत जरूरी है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने भारतीय ज्ञान परंपरा को सुदृढ़ किया है। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने बृहद वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखा और ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जिसके कारण देशवासियों का सिर आज भी यश और गौरव से उन्नत है। आदिकाल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान एपरंपराएं एवं प्रथाएं मनुष्यता को प्रोत्साहित करती थी।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक आदि रहे हैं। वेद भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम और प्रमुख ग्रंथ हैं। वेद चार हैं ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। इसमें अध्यात्म और विज्ञान की आदि विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है। उपनिषदों में आत्मा के ज्ञान को प्रमुखता दी, जिसमें भारतीय दर्शन की नींव रखी गई।

पुराण में शिक्षा को अप्रतिम माना गया है। देश में नालंदा, तक्षशिला, बल्लभी, विक्रमशिला, उज्जयिनी, काशी इत्यादि प्राचीन शिक्षा और शोध के प्रमुख केंद्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा आदिकाल से ही सतत्, दीर्घकालिक एवं चिरस्थाई रही है जो संपूर्ण मनुष्य वर्ग के कल्याण हेतु प्रयास करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा से आशय

भारतीय संस्कृति और संस्कृत का वास्तविक स्तंभ ही भारतीय ज्ञान परंपरा है। प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा सम्मिलित है। भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वर्णिम इतिहास पर विचार करने पर पता चलता है कि प्राचीन समय में इस परंपरा का अभीष्ट लक्ष्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था।

वेद और उपनिषद काल की भारतीय ज्ञान परंपरा बौद्ध और जैन काल में भी रही जो कई विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था में स्पष्ट दिखाई देती हैं। जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पालौकिक, भोग व त्याग, कर्म एवं धर्म का अद्भुत समन्वय रहा है। वास्तव में आदिकाल में ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परंपरा का दृष्टिकोण बहुत ही व्यापक और सूक्ष्म रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक नदी की तरह है जो सदियों से प्रवहमान है। इस ज्ञान परंपरा की कई विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं का सम्मिलित रूप हमारे व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण हिस्से बनकर हमारे सामने उपस्थित रहते हैं। कह सकते हैं कि जो भारतीय ज्ञान परंपरा है उन्हीं से हमारा पूर्ण विकास हुआ है। इसलिए ज्ञान को अनिवार्य रूप से जानना चाहिए एवं उसके संवर्द्धन के लिए लगातार प्रयत्न भी करना चाहिए। ज्ञान की परंपरा भक्ति काव्य में अपने चरम रूप से हमें दिखाई देती है। भक्ति काव्य भक्ति काल की अद्भुत कृति है।

भक्ति काव्य मानवीय चेतना की एक उत्कृष्ट साधना है। भक्ति काल में जितने भी संत भक्त कवि हुए सभी ने मनुष्यता को सर्वोपरि रखा। मानव विरोधी विचार को सभी कवियों ने अपने तेवर से ध्वस्त करने का कार्य किया। निर्गुण एवं सगुणमार्गी कवियों ने मनुष्यता को कलंकित करने वाले बिंदुओं की पहचान की एवं उन पर लगातार प्रहार किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति काव्य का संबंध

भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास में भक्ति आंदोलन विशेष है। भारतीय ज्ञान की अवधारणा जो आदिकाल से चली आ रही है, उसका विस्तृत रूप हमें भक्तिकाल में दिखाई देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति काव्य का संबंध निम्न प्रकार है :

1 भक्ति काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण काल कहा गया है। भक्ति काव्य ने ही भारत की ज्ञान

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

परंपरा को जन सामान्य तक पहुंचने में अहम् भूमिका अदा की है।

2 भक्ति काल का प्रभाव सभी संस्कृतियों तथा संपूर्ण देश में हुआ।

3 भक्ति काव्य ने संपूर्ण देश में एक नए आंदोलन और परंपरा की शुरुआत की।

4 भक्ति काल ने जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया।

5 भक्ति काल में ज्ञान की परंपरा बहुत ही समृद्ध हुई है।

6 भक्ति काल में निर्गुण और सगुण भक्त कवियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को नई दिशा दी है।

7 भक्ति काल में निर्गुण धारा के ज्ञानमार्गी के संत कबीरदास तथा प्रेम मार्गी के मलिक मोहम्मद जायसी और राम मार्गी में गोस्वामी तुलसीदास तथा कृष्ण मार्गी धारा में सूरदास ने रचनाएं की हैं।

भक्ति काव्य में माननीय मूल्यों का जो उत्कर्ष मिलता है वह अन्यतम है। भक्त कवियों का प्रमुख लक्ष्य मानवीय सामाजिक चिंता थी। उनकी दृष्टि में मनुष्यता का विकास करने वाले तत्व ही मानव मूल्य हैं। परोपकार, दया, करुणा, त्याग, निरभिमानता, क्षमाशीलता, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि उदात्त भावनाओं का रूप ही मानव का कल्याण कर सकता है।

दादू कहते हैं,

दया धर्म का रुखड़ा, सत सो बढ़ता जाई।
संतोष सो फूले फलै, दादू अमर फल खाई।।

तुलसीदास जी भी कहते हैं, 'परहित सरिस धरम नहीं भाई, पर पीड़ा नहीं सम अधमाई।'

8 भक्ति काव्य में रामानंद, चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य जैसे आचार्यों के सिद्धांतों का भी दर्शन होता है।

9 वात्सल्य सम्राट सूरदास ने कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन किया है। ईश्वर की नित्य लीला सृष्टि में प्रवेश करना ही जीव की सबसे उत्तम गति है।1

10 गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से नई जनचेतना उत्पन्न की है। उनके बिना भक्ति काव्य की परंपरा पूरी नहीं हो सकती है।

भगवान के प्रति अगाध स्नेह

भगवान के प्रति उत्कट स्नेह का अनुभव करना ही भक्त की पहचान है। सभी भक्त कवियों में इस विशेषता को समान रूप से पा सकते हैं। चाहे वे निर्गुण में आस्था रखते हों या सगुण में, चाहे वे राम की उपासना करते हों या कृष्ण की। अपने आराध्य के प्रति गहरी अनुरक्ति एवं उसको पाने की लालसा उनमें समान रूप से मिलती है।

कबीर कहते हैं.

आंखडियां झांई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभडियां छाला पड़या राम पुकारि पुकारि।

सूर और तुलसी का संपूर्ण साहित्य ईश्वर के प्रति अगाध स्नेह का ही परिणाम है।

तुलसी दास कहते हैं :

एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास।

11 भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य परंपरा का स्थान अनूठा ही है, जो प्रत्येक युग में भारत को ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को ज्ञान देती रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरुकुल परंपरा में शिष्य गुरु के आज्ञानुसार ज्ञान की विभिन्न सरणियों का अध्ययन करते थे और जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में अनुशासन का पालन करते हुए जीवन यापन करते थे। इस परंपरा में विद्या का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्मान होता था और ज्ञान को अनमोल धरोहर के रूप में देखा जाता था। गुरु-शिष्य परंपरा को प्रस्तुत करते हुए कबीर दास जी कहते हैं :

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपणी जिन गोविंद दियो बताय।।2

एक मात्र गुरु ही हैं जो अच्छे और बुरे के अंतर का ज्ञान दे सकते हैं। इसलिए समूची भक्तिकालीन कविता में गुरु के बिना किसी भी प्रकार के ज्ञान या पहचान की कल्पना करना संभव नहीं है।

संत दादू दयाल के गुरु तो घट.घट में समाए हुए हैं :

घट घट रामहिं रतन हैए दादू लखै न कोई।
सतगुरु सबदों पाइयेए सहजे ही गम होइ।।

वास्तव में यह भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

12 मीरा और जायसी ने प्रेमाभक्ति के गेय पदों द्वारा भक्ति, श्रद्धा और भगवान के प्रति समर्पण के विषय में कहा है। मीरा ने तो श्री कृष्ण को ही सर्वस्व मान लिया था।

मेरे तो गिरधर गोपाल
दूसरों न कोय।3

महाकवि कबीर दास सदैव ज्ञान को महत्व देते हैं। उनका मानना है कि परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान और प्रेम के आधार पर ही हो सकती है। वे कहते हैं कि :

पोथी पढ़ .पढ़ जुग भया पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।। 4

जाति प्रथा का विरोध

मध्यकालीन संतों ने मनुष्य और मनुष्य के बीच भेद करने वाली जाति प्रथा का कठोरता के साथ विरोध किया है। कबीरदास ने सामाजिक अन्याय, धार्मिक अंधविश्वास और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई। उनके संदेश में सबको एक समान भाव और प्रेम से देखने की प्रेरणा मिलती है। कबीर मनुष्य और मनुष्य के बीच में खाई पैदा करने वाली जाति व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए पंडा, पुरोहित, मौलवी आदि के महत्व और अस्तित्व को नकारते हुए कहते हैं :

जौ तूं बांमन बांमनी जाया।
तौ आन बाट हवै क्यों नहीं आया।।

वस्तुतः कबीर मानव एकता के हिमायती थे। जन्म के आधार पर श्रेष्ठता और निकृष्टता का भाव पैदा कर इंसानों के बीच फांक पैदा करने वाली सभी मान्यताओं और व्यवस्थाओं को कबीर सिरे से नकार देते हैं। कबीर के यहां प्रेम और ज्ञान महत्वपूर्ण हैं। कबीर ने जो नया पथ चुनाए समाज के सुधार और पुनर्निर्माण काए उसका आधार प्रेम और ज्ञान ही है :

जाति पांति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।

वास्तव में भक्ति काल के संतों की वाणी से भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास सतत् हुआ है। ज्ञान की पद्धति ने सीखने एवं शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया। वास्तव में कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे एवं ज्ञान वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए इनके अलावा जो भी कर्म हैं वे सब निपुणता देने वाले मात्र हैं। ज्ञान के इन विचारों को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तदनुरूप ही विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में ज्ञान दिया जाता था।

निष्कर्ष

हम यह कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा का संपूर्ण विश्व पर अमिट प्रभाव है। पूरा हिंदी साहित्य ज्ञान का वह कल्पवृक्ष है जिसका प्रत्येक पत्ता नई कलाओं और भावनाओं से मंडित है। भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा का संकेत है जिसमें लौकिक और पारलौकिक,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ज्ञान और विज्ञान, धर्म और कर्म एवं भोग और त्याग का अद्भुत और निराला समन्वय है। वैदिक युग के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के भौतिक, नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर केंद्रित होकर सत्यता, विनम्रता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर बल देती थी। ऋग्वेद में विद्या को मानव की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया। भारतीय ज्ञान परंपरा में भक्ति काव्य वह हीरकमणी है जिसमें संपूर्ण भावनाएं सम्मिलित है। उसमें भक्ति भी है, ज्ञान भी है, शिक्षा भी है और समाज सुधार भी। इस प्रकार भक्ति काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक मुख्य और अतुलनीय स्रोत है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 रामचंद्र शुक्ल (1941), हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 156

2 डॉ.वासुदेव सिंह कबीर : साहित्य और साधना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847 इलाहाबाद, संस्करण 1994

3 संपादक डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, 2016

4 हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौबीसवां संस्करण, 2018

5 भ्रमरगीत सार, संपादक : रामचंद्र शुक्ल कमल प्रकाशन, नई दिल्ली

6 बलराम तिवारी, सूर की काव्य चेतना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

7 डॉ.वासुदेवसिंह दादू, संतवाणी संग्रह पृष्ठ 148 हिंदी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ 300

8 रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर